प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत
[SOURCES OF ANCIENT INDIAN HISTORY]

ई. पू. छठी शताब्दी (600 B.C.) से पूर्व के भारतीय इतिहास को जानने के समकालीन स्रोत सीमित हैं। परन्तु उस शताब्दी (600 B.C.) से प्रारम्भ होने वाले इतिहास के स्रोत हमें पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं। इस दिशा में पर्याप्त कार्य हो चुका है और हो रहा है जिससे प्राचीन भारत के इतिहास के हमारे ज्ञान में निरन्तर वृद्धि हुई है और आगे भी बहुत कुछ होने की सम्भावना है। इससे स्पष्ट है कि प्राचीन भारत के इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने की पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है और इस कारण यह भी स्वीकार्य है कि भारतीय इतिहास-रचना की प्रवृत्ति से सर्वथा उदासीन न थे। परन्तु तब के प्राचीन भारतीयों ने ऐतिहासिक तथ्यों का क्रमानुसार वर्णन नहीं किया और भारतीय इतिहास की रचना करने में असमर्थ रहे। भारत में यूनानी इतिहासकार **हिरोडोटस**, रोमन इतिहासकार **लिबी**, तुर्की इतिहासकार **अलबरूनी** आदि जैसे इतिहास-लेखक नहीं हुए। **प्रो. ए. बी. कीथ** ने प्राचीन भारतीय इतिहास की रचना में त्रुटि के तीन कारण बताये हैं—*प्रथम*, कोई भी विदेशी आक्रमण इतना गम्भीर न था जिससे भारत में राष्ट्रीय भावना की जागृति सम्भव हो पाती और कोई विद्वान अपने राष्ट्रीय इतिहास को लिखने की प्रेरणा प्राप्त कर पाता; *द्वितीय*, भारतीयों का भाग्यवादिता का दृष्टिकोण जिसने उन्हें सभी भौतिक घटनाओं के प्रभाव से विमुख रखा; और *तृतीय*, भारतीयों ने ऐतिहासिक घटनाओं और किंवदन्तियों में कोई अन्तर नहीं किया। प्रो. कीथ के विचारों में पर्याप्त सत्यता है। परन्तु एक अन्य कारण भी इनसे कहीं अधिक प्रभावपूर्ण रहा।

भारतीयों ने ऐतिहासिक ज्ञान को विस्तृत ज्ञान का एक अंग माना और उसे धर्म, नैतिकता, राजनीति, अर्थव्यवस्था, साहित्य आदि के साथ सम्मिलित कर दिया। इस कारण यह भी माना जाता है कि भारत में ज्ञान की एक पृथक् शाखा के रूप में इतिहास की रचना मुसलमानों के आगमन के समय से आरम्भ हुई। 11वीं सदी में **अलबरूनी** ने ठीक ही कहा था कि, "हिन्दू घटनाओं के ऐतिहासिक क्रम की ओर अधिक ध्यान नहीं देते। घटनाओं के कालक्रमानुसार वर्णन में वे बड़ी असावधानी दिखाते हैं। जब उनसे सूचना देने के लिए आग्रह किया जाता है तो वे किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं और प्रायः 'जातक' (कहानियाँ) सुनाने लगते हैं।" इसलिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होते हुए भी प्राचीन भारत के इतिहास को जानने में बहुत कठिनाई और देरी हुई।

एक अन्य दृष्टि से भी भारतीयों ने गलती की। भारत के प्राचीन इतिहास और उसकी सभ्यता के गौरव को जानने का कार्य स्वयं भारतीयों ने नहीं बल्कि अंग्रेज विद्वानों ने आरम्भ किया जिसके कारण भारतीय इतिहास के बारे में विभिन्न भ्रान्तिपूर्ण धारणाओं का निर्माण

Scanned with CamScanner

हुआ। निस्सन्देह, अब भारतीय विद्वानों ने अपने प्रयत्नों के कारण इन भ्रान्तिपूर्ण धारणाओं को दूर करके प्राचीन भारत के इतिहास को उसका उचित स्थान प्रदान कराने में सफलता प्राप्त की है और इस दिशा में निरन्तर खोज और शोध का कार्य चल रहा है, परन्तु यह स्वीकार करना पड़ता है कि इस कार्य का प्रारम्भ अंग्रेज विद्वानों के द्वारा किया गया।

प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने का कार्य 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध से प्रारम्भ हुआ जबकि मैक्समूलर जैसे विद्वानों ने वेदों का अंग्रेजी में अनुवाद करके भारतीय संस्कृति के गौरव की स्थापना की और सर विलियम जोन्स जैसे विद्वानों ने भारत के अतीत को खोजने का प्रयास किया। **सर विलियम जोन्स** ने बंगाल में उच्चतम न्यायालय के एक न्यायाधीश के पद पर कार्य किया। उन्हें भारतीय संस्कृति और इतिहास में रुचि हुई। उन्होंने **कोलब्रुक** और **विल्सन** जैसे विद्वानों की सहायता से *भगवद्गीता, हितोपदेश, शकुन्तला, गीत-गोविन्द* जैसे ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद किया तथा 1784 ई. में **बंगाल का एशिया-समाज** (The Asiatic Society of Bengal) की स्थापना की और *एशिया के शोध-कार्य* (Asiatic Researches) नामक पत्रिका को आरम्भ किया। उनके इन कार्यों से विभिन्न विद्वानों में भारतीय इतिहास और सभ्यता के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई। परिणामस्वरूप, सरकार ने 1862 ई. में अलेक्जेण्डर कनिंघम के नेतृत्व में 'भारतीय पुरातत्व विभाग' की स्थापना की। लॉर्ड कर्जन ने इस विभाग के कार्यों में पर्याप्त रुचि प्रदर्शित की और उसके समय में प्राचीन स्मारकों की खोज एवं उनकी सुरक्षा की व्यवस्था की गयी। उसके पश्चात् यह कार्य बढ़ता गया और अनेक अंग्रेज व भारतीय विद्वानों ने प्राचीन भारत के इतिहास की खोज में अपना सहयोग दिया। **सर जॉन मार्शल** और **राखलदास बनर्जी** ने 1920 ई. में सिन्धु घाटी की सभ्यता की खोज की। प्राथमिक भारतीय विद्वानों में से **डॉ. भान दाजी, डॉ. भगवान लाल, इन्द्रजी, राजेन्द्र लाल मित्र, सर आर. जी. भण्डारकर** जैसे विद्वानों का काम सराहनीय रहा। तत्पश्चात् अनेक भारतीय और विदेशी विद्वान इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर चुके हैं। उनके प्रयत्नों के कारण प्राचीन भारतीय इतिहास अब अपना उचित स्थान प्राप्त कर चुका है और इसमें जो कमी अथवा त्रुटियाँ हैं उन्हें दूर करने के प्रयत्न निरन्तर चल रहे हैं।

सुविधा की दृष्टि से हम प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने की सामग्री का वर्गीकरण निम्न प्रकार कर सकते हैं :

1. साहित्यिक स्रोत

[LITERARY SOURCES]

साहित्यिक स्रोत के अन्तर्गत हम उस समस्त सामग्री को सम्मिलित करते हैं जो हमें ग्रन्थों और लेखों के रूप में उपलब्ध है। हमारे साहित्यिक स्रोत दो प्रकार के होते हैं— (1) धार्मिक साहित्य, (2) धर्मनिरपेक्ष साहित्य।

(1) धार्मिक साहित्य

[RELIGIOUS LITERATURE]

धार्मिक साहित्य में ब्राह्मण तथा ब्राह्मणेत्तर ग्रन्थों की चर्चा की जा सकती है। ब्राह्मण ग्रन्थों में वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, पुराण तथा स्मृति ग्रन्थ आते हैं, जबकि ब्राह्मणेत्तर ग्रन्थों में बौद्ध तथा जैन साहित्यों से सम्बन्धित रचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है।

(A) वैदिक साहित्य

(I) **वेद**—वेद भारत के सर्वप्राचीन धर्म ग्रन्थ हैं जिनका संकलनकर्त्ता महर्षि **कृष्ण-द्वैपायन वेद व्यास** को माना जाता है। वेद की उत्पत्ति 'विद्' से हुई, जिसका शाब्दिक अर्थ

Scanned with CamScanner

होता है—'ज्ञान'। श्रवण परम्परा में सुरक्षित होने के कारण इसे 'श्रुति' भी कहा जाता है। वेद चार हैं—ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद।

(1) **ऋग्वेद**—यह विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ है। इसके *ऋक* का अर्थ छन्दों तथा चरणों से युक्त मन्त्र होता है। ऋग्वेद मंत्रों का एक संकलन (संहिता) है जिन्हें यज्ञों के अवसर पर देवताओं की स्तुति के लिए 'होत्' ऋषियों द्वारा उच्चारित किया जाता है। ऋग्वेद की अनेक संहिताओं में सम्प्रति *शाकल संहिता* ही उपलब्ध है। 'संहिता' का अर्थ संग्रह या संकलन होता है। ऋग्वेद में 10 मण्डल, 85 अनुवाक, 1028 सूक्त तथा 10,552 मन्त्र हैं। ऋग्वेद की पाँच शाखाएँ हैं—**शाकल, वाष्कल, आश्व लायन, शंखायन** तथा **मांडक्य**। इस वेद का अधिकांश भाग देव-स्तोत्रों से भरा हुआ है और इस प्रकार इसमें ठोस ऐतिहासिक सामिग्री बहुत कम मिलती है। परन्तु इसके कुछ मन्त्र ऐतिहासिक घटनाओं का भी उल्लेख करते हैं। जैसे—एक स्थान पर "दस राजाओं के युद्ध" (दाशराज्ञ) का वर्णन आता है, जो भरत कबीले के राजा सुदास के साथ हुआ था। यह युद्ध आर्यों के दो प्रमुख जनों—'पुरु' तथा 'भरत' के मध्य हुआ था। भरत जन के नेतृत्वकर्त्ता सुदास था जिसके पुरोहित वशिष्ठ थे। इसके विरुद्ध दस राजाओं का एक संघ था जिसके पुरोहित विश्वामित्र थे। सुदास ने 'रावी नदी' के किनारे पर दस राजाओं के इस संघ को पराजित किया था और वह भारत का चक्रवर्ती राजा बन गया। ऋग्वेद के दो से सातवें मण्डल प्रामाणिक हैं तथा शेष मण्डल प्रक्षिप्त अर्थात् जाली माने जाते हैं। सबसे बाद में जोड़े गये दसवें मण्डल में पहली बार **शूद्रों** का उल्लेख किया गया है, जिसे **पुरुषसूक्त** के नाम से जाना जाता है। देवता 'सोम' का उल्लेख नवें मण्डल में है। लोकप्रिय *गायत्री मन्त्र/ सावित्री मन्त्र* का उल्लेख भी ऋग्वेद में ही मिलता है।

(2) **सामवेद**—'साम' का अर्थ 'संगीत' या 'गान' होता है। इसमें यज्ञों के अवसर पर गाये जाने वाले मंत्रों का संग्रह है। इन मंत्रों को गाने वाला 'उद्गाता' कहलाता था। सामवेद के दो भाग हैं—आर्चिक एवं गान। इसके प्रथम दृष्टा **वेदव्यास** के शिष्य **जैमिनी** को माना जाता है। सामवेद की प्रमुख शाखाएँ हैं—कौथुमीय, जैमिनीय तथा शणायनीय। सामवेद में कुल 1549 ऋचायें हैं जिनमें मात्र 75 ही मौलिक हैं, शेष ऋग्वेद से ली गयी हैं। सामवेद को **भारतीय संगीत का जनक** माना जाता है।

(3) **यजुर्वेद**—'यजुष' का अर्थ है—'यज्ञ'। यजुर्वेद संहिता में यज्ञों को सम्पन्न कराने में सहायक मन्त्रों का संग्रह है। इन मन्त्रों का उच्चारण करके देवावाहन करने वाला 'होता' कहलाता था। इसमें सर्वप्रथम गद्यात्मक रचनाएँ मिलती हैं। पतञ्जलि ने यजुर्वेद की 101 शाखाओं की चर्चा की है किन्तु इस समय केवल 5 शाखाओं का पता चलता है जिनमें प्रथम चार तो कृष्ण यजुर्वेद की हैं और अन्तिम शुक्ल यजुर्वेद की हैं। यजुर्वेद की शाखाओं के नाम हैं—काठक, कपिष्ठल, मैत्रायणी, तैत्रिरीय तथा वाजसनेयी। यजुर्वेद के दो भाग हैं—(i) कृष्ण यजुर्वेद एवं (ii) शुक्ल यजुर्वेद। शुक्ल यजुर्वेद में केवल ऋचाएँ सूक्त व यज्ञीय पद्य हैं जबकि कृष्ण यजुर्वेद में गद्य भाष्य भी हैं।

(4) **अथर्ववेद**—उपर्युक्त तीनों संहितायें जहाँ परलोक सम्बन्धी विषयों का प्रतिपादन करती हैं, वहीं अथर्ववेद संहिता लौकिक फल प्रदान करने वाली मानी जाती है। 'अथर्वा' नामक ऋषि इसके 'प्रथम दृष्टा' थे। अतः उन्हीं के नाम पर उसे अथर्ववेद कहा गया। इसके दूसरे दृष्टा 'आंगिरस' ऋषि के नाम पर इसे 'अथवाँङ्गि रस वेद' भी कहा जाता है। इस वेद में उस समय के समाज का चित्रण मिलता है, जब आर्यों ने अनार्यों के अनेक धार्मिक विश्वासों को अपना लिया था। अथर्ववेद की दो शाखायें—(i) पिप्पलाद एवं (ii) शौनक हैं। इस

Scanned with CamScanner

संहिता में कुल 20 काण्ड, 731 सूक्त तथा 5987 मंत्र हैं। ब्रह्म विद्या विषयक होने के कारण इसे **ब्रह्मवेद** भी कहा जाता है। रोग-निवारण, तंत्र-मंत्र, जादू-टोना, शाप, वशीकरण, आशीर्वाद, प्रायश्चित, औषधि, अनुसन्धान आदि विषयों का इसमें उल्लेख मिलता है। आयुर्वेद के सिद्धान्त तथा व्यवहार की अनेक बातों का भी इसमें उल्लेख है।

(II) **ब्राह्मण ग्रन्थ**—ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना यज्ञीय विधानों की जटिलता बढ़ने के कारण उन्हें स्पष्ट करने के लिए की गयी थी। 'ब्रह्म' शब्दार्थ 'यज्ञ' है, अतः यज्ञीय विषयों के प्रतिपादक ग्रन्थ 'ब्राह्मण' कहे गये। वेद ग्रन्थ जहाँ स्मृति प्रधान है, वहीं ब्राह्मण ग्रन्थ विधि प्रधान है जो अधिकांशतः गद्य में लिखे गये हैं। प्रत्येक वेद के पृथक्-पृथक् ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। इनका विवरण निम्न प्रकार है—

(i) **ऋग्वेद**—ऐतरेय एवं कौषितकी।

(ii) **सामवेद**—पंचविश या तांड्य, षड्विश एवं जैमिनी।

(iii) **यजुर्वेद**—तैत्तरीय एवं शतपथ।

(iv) **अथर्ववेद**—गोपथ।

(III) **आरण्यक ग्रन्थ**—इनको 'अरण्यों' अर्थात् वनों में पढ़ाये जाने के कारण 'आरण्यक' कहा गया। इनमें ज्ञान और चिन्तन को प्रधानता दी गयी है। इन दार्शनिक रचनाओं से ही कालान्तर में उपनिषदों का विकास हुआ। प्रमुख आरण्यक ग्रन्थ हैं—ऐतरेय, तैत्तिरीय, कौषीतकी, मैत्रायणी, तलवकार तथा माध्यन्दिन।

(IV) **उपनिषद**—इसका शाब्दिक अर्थ 'उप + निषद' = समीप बैठना होता है। इन्हें **वेदांत** भी कहा जाता है। इनका मुख्य विषय ब्रह्मविद्या का प्रतिपादन है। इनमें गुरु के समीप बैठकर ब्रह्मविद्या का ज्ञान प्राप्त किया जाता था अतः ये ग्रन्थ 'उपनिषद' कहलाये। भारतीय दर्शन का आदि-सूत्र यहीं से उद्विकसित होता है। वैसे तो *मुक्तिकोपनिषद* में 108 उपनिषदों का उल्लेख मिलता है। किन्तु सर्वाधिक प्राचीन और प्रामाणिक 12 उपनिषद माने जाते हैं—ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक, श्वेताश्वतर तथा कौषतिकी। **शंकराचार्य** ने आरम्भिक 10 उपनिषदों पर 'भाष्य' लिखा। भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य "सत्यमेव जयते"—'मुण्डकोपनिषद' से लिया गया है।

(V) **वेदांग**—वेदों (संहिता) के अर्थ को सरलता से समझने तथा वैदिक कर्मकाण्डों के प्रतिपादन में सहायता देने के लिए 'वेदांग' नामक नवीन साहित्य की रचना की गयी। इनकी संख्या 6 है—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष।

(B) ब्राह्मण साहित्य

(I) **पुराण**—'पुराण' का शाब्दिक अर्थ **प्राचीन आख्यान** होता है। पाँचवीं से चौथी शताब्दी ई.पू. में पुराण ग्रन्थ अस्तित्व में आ चुके थे। मुख्य पुराणों की संख्या 18 है—ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, नारदीय, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, वामन, वाराह, स्कन्द, वायु, अग्नि, गरुड़, मत्स्य एवं कूर्म।

पुराणों के अन्तर्गत हम प्राचीन शासकों की वंशावलियाँ पाते हैं। इनके संकलनकर्त्ता महर्षि **लोमहर्ष** अथवा उनके सुपुत्र **उग्रश्रवा** माने जाते हैं। पुराण सरल एवं व्यावहारिक भाषा में लिखे गये जनता के ग्रन्थ हैं। इनमें प्राचीन ज्ञान-विज्ञान, पशु-पक्षी, वनस्पति विज्ञान, आयुर्वेद आदि का वृहद वर्णन मिलता है।

(II) **स्मृतियाँ**—धर्मसूत्र साहित्य से कालान्तर में स्मृति ग्रन्थों का विकास हुआ इसलिए इन्हें **धर्मशास्त्र** की संज्ञा भी दी जाती है। ये मानव-जीवन के विविध कार्यकलापों पर लिखित

Scanned with CamScanner

हैं और इनमें अनेक विधि निषेधों का वर्णन है। कुछ प्रमुख स्मृति ग्रन्थ निम्न हैं—मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य-स्मृति, विष्णु स्मृति, नारद स्मृति, कात्यायन स्मृति, बृहस्पति स्मृति, पाराशर स्मृति, गौतम स्मृति, देवल स्मृति आदि। इनमें मनुस्मृति सर्वाधिक प्राचीन तथा प्रामाणिक है। विष्णु स्मृति के अतिरिक्त शेष स्मृतियाँ श्लोकों में लिखी गयी हैं और इनकी भाषा लौकिक संस्कृति है। स्मृतियों में विभिन्न वर्णों, राजाओं और पदाधिकारियों के नाम भी दिये गये हैं।

(III) महाकाव्य—महाकाव्य दो हैं—रामायण तथा महाभारत।

वाल्मीकि द्वारा रचित महाकाव्य **रामायण** के मूलतः 6000 श्लोक थे जो कालान्तर में 12000 हुए और फिर 24000 हो गये। वाल्मीकि के मूल रामायण में केवल पाँच काण्ड ही थे, जिसमें 'राम' को युग का एक महान पुरुष माना गया है। वर्तमान में इसको सात काण्डों में विभक्त किया गया है—बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंका काण्ड और उत्तर काण्ड। बालकाण्ड और उत्तर काण्ड के अधिकांश भाग काल्पनिक माने जाते हैं।

व्यास कृत **महाभारत** महाकाव्य में प्रारम्भ में मात्र 8800 श्लोक थे और इसका नाम **जय संहिता** (विजय सम्बन्धी ग्रन्थ) था। बाद में श्लोक संख्या बढ़कर 24000 हो जाने पर **भारत** नाम से प्रसिद्ध हुआ क्योंकि इसमें वैदिक जन भरत के वंशजों की कथा थी। कालान्तर में इसमें एक लाख श्लोक हो गये और यह **शतसाहस्त्री संहिता** या **महाभारत** कहलाने लगा। इसमें कथोपकथायें, वर्णन और उपदेश हैं। मूलकथा कौरव-पाण्डवों के युद्ध की है जो उत्तर वैदिक काल की है। इसमें कुल 18 पर्व (अध्याय) हैं।

(C) बौद्ध साहित्य

गौतम बुद्ध के बाद उनकी शिक्षाओं को विभिन्न बौद्ध संगतियों के निर्वाण (सभाओं) में संकलित कर तीन 'पिटकों' (पिटारियों) में विभाजित किया गया—

(i) **विनयपिटक,** जिसमें बौद्ध-संघ के संगठन और उससे सम्बन्धित नियमों का उल्लेख है,

(ii) **सुत्तपिटक,** जिसमें बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों तथा उपदेशों का वर्णन है, और

(iii) **अभिधम्मपिटक,** जिसमें बौद्ध दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन है।

इन तीनों को सम्मिलित रूप से **त्रिपिटक** पुकारा गया है। बाद में महात्मा बुद्ध के पूर्व-जीवन से सम्बन्धित जातक-कथाओं का निर्माण हुआ जिनकी संख्या 549 है। इनके अतिरिक्त, बौद्ध धर्म की महायान और तान्त्रिक (वज्रयान) शाखाओं ने भी विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों की रचना की। इन बौद्ध-ग्रन्थों में *अनुगुत्तर-निकाय* जिससे हमें ईसा पूर्व छठी शताब्दी की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थिति को जानने में सहायता मिलती है; बौद्ध-विद्वान **नागार्जुन** द्वारा रचित *महायान-सूत्र, सत्सहारिका,* आदि; **प्रसंग** द्वारा रचित *महायान-सूत्र-लभकर;* **वसुबन्धु** द्वारा रचित *अभिधर्म-कोष,* तथा अन्यों द्वारा रचित *मिलिन्दपह्न, दिव्यावदान, आर्यमंजूश्रीमूलकल्प, ललितविस्तार* आदि ग्रन्थ मूल्यवान ऐतिहासिक सामग्री प्रदान करते हैं। प्राचीन बौद्ध-ग्रन्थों से हमें प्राचीन भारत के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन का ज्ञान होता है। इसके अतिरिक्त इनसे हमें ई. पू. छठी शताब्दी की राजनीतिक दशा का ज्ञान भी प्राप्त होता है। बौद्ध-साहित्य से हमें भारत के विदेशों से हुए सांस्कृतिक सम्बन्धों के बारे में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त होता है। श्रीलंका में रचित *महावंश* और *दीपवंश* ग्रन्थों ने भी प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने में सहायता दी है।

Scanned with CamScanner

(D) जैन साहित्य

आदिजैन-ग्रन्थों को **आगम** पुकारा गया। इनकी रचना महावीर स्वामी की मृत्यु के बाद विभिन्न संगतियों में ई. पू. चौथी शताब्दी से छठी शताब्दी ई. के मध्य हुई। **आगम** में 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसूत्र, 4 मूलसूत्र तथा दो अन्य ग्रन्थ—नन्दि सूत्र एवं अनुयोग द्वार सम्मिलित हैं। जैन ग्रन्थों—'आगम' का बाद में संकलन 'पूर्व' नामक 14 ग्रन्थों में किया गया और उसके पश्चात् उनका संकलन 'अंग' नामक 12 ग्रन्थों में हुआ जिनमें से एक खो चुका है। परन्तु 11 'अंग' अब भी प्राप्त हैं। उनके पश्चात् भी विभिन्न जैन धर्म-ग्रन्थों का निर्माण हुआ जिनसे भारतीय इतिहास को जानने में सफलता मिली है। *भद्रबाहुचरित* से हमें चन्द्रगुप्त मौर्य के काल की कुछ घटनाओं को जानने का अवसर मिलता है। *वसुदेवहिण्डी, वृहत्कल्पसूत्र भाष्य, कालिका पुराणकथा कोश* आदि जैन-ग्रन्थ भी हमें पर्याप्त ऐतिहासिक सामग्री प्रदान करते हैं। बाद के समय के ग्रन्थों में सबसे महत्वपूर्ण 'परिशिष्ट पर्व' है जिसकी रचना 12वीं सदी में की गयी।

Scanned with CamScanner